पाठ : बाजार दर्शन

लेखिका : जैनेंद्र कुमार

पाठ का सार

लेखक के एक मित्र अपनी पत्नी के साथ बाजार गए। जब वापस आए, बहुत से बंडल उनके पास थे। लेखक के पूछने पर - "इतना सामान?" तो मित्र अपनी पत्नी की ओर इशारा करके बोले - "ये जो साथ थी।" वास्तविकता यह है कि व्यक्ति अपनी पर्चेजिंग पावर का प्रयोग करता है। व्यक्ति अपने पैसे की पावर को माल-असबाब, कोठी-मकान से प्रकट करता है। मित्र का यह भी कहना था - "बाजार शैतान के जाल की तरह है।" वहाँ के सामान को देखकर लगता है कि सब सामान हमें आमंत्रित कर रहा है। बाजार का आकर्षण व्यक्ति को विकल, तृष्णा, ईर्ष्या से युक्त बना देता है। उसे लगता है कि उसके पास कुछ नहीं।

लेखक का एक दूसरा मित्र भी बाजार गया और कुछ भी खरीद कर नहीं लाया। लेखक ने उससे पूछा - "कुछ लाए नहीं।" मित्र ने कहा - "सब चीज अच्छी थी। लगता यह भी खरीदूँ, वह भी खरीदूँ । इसलिए कुछ नहीं खरीद सका।"

बाजार का जादू आँखों के रास्ते काम करता है। जेब भरी हो और मन खाली हो तो बाजार का जादू खूब चलता है। हर चीज जरूरी लगती है, आराम पहुँचाने वाली लगती है। बाजार का जादू जब उतरता है, तब ये सब आराम पहुँचाने वाली नहीं, बल्कि आराम में खलल डालने वाली लगती हैं। ये सब सामान स्वाभिमान, अभिमान को सुकून देता है।

बाजार के जादू से बचने का एक ही उपाय है - बाजार जाओ तो खाली मन से नहीं जाओ। मन लक्ष्य से भरा होगा तो बाजार का जादू फैला रह जाएगा। आप अपनी जरूरत का सामान ही लेंगे और बाजार भी आपसे कृतार्थ होगा।

लेखक का कहना है - एक चूरन वाले भगत जी थे। उनका चूरन बहुत लोकप्रिय था। उनका चूरन हाथों-हाथ बिक जाता था। वो अपना चूरन न व्यापारियों को बेचते थे, न थोक में बेचते थे, न किसी से पेशगी ऑर्डर लेते थे। वो अपनी चूरन की पेटी लेकर घर से निकलते और छह आने पैसे लेकर बाकी बचा हुआ चूरन बच्चों में बाँट कर घर चले आते थे। चूरन हमेशा एक जैसा होता और वो कभी बीमार भी नहीं होते थे। बाजार का जादू उन पर नहीं

चलता। उनका मन अडिग है। पैसा उनके पास आना चाहता है, पर वो पैसा उतना ही लेते हैं, जितना उन्होंने सोचा है।

चूरन वाले भगत जी जब सामान लेने के लिए बाजार जाते हैं, बाजार का जादू उन पर नहीं चलता। वो सीधा उस पंसारी की दुकान पर जाते हैं, जिससे उन्हें जीरा लेना है। ऐसे लोग, जो बाजार से कितना लाभ लेना है तथा बाजार से कितना खरीदना है, बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

जो लोग अपनी पर्चेज़िंग पावर के गर्व में पैसे से केवल विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति बाजार को देते हैं, ऐसे लोग बाजार के बाजारूपन को बढ़ावा देते हैं। इससे आपसी प्रेम, भाईचारा खत्म होता है, लोग एक दूसरे के साथ बेचक और गाहक का व्यवहार करते हैं। बाजारूपन से शोषण, एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना होते हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

पठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

(1)

बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है। पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है, तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ।

प्रश्न 1) लेखक ने क्यों कहा है - बाजार में एक जादू है?

उत्तर :- बाजार में अनेक मन को लुभाने वाली वस्तुएँ होती हैं। व्यक्ति का मन करता है कि सब खरीद लूँ। इसीलिए लेखक ने कहा है कि बाजार में जादू है।

प्रश्न 2) बाजार के जादू की क्या मर्यादा है?

उत्तर :- जैसे चुंबक का जादू लोहे पर चलता है, वैसे ही बाजार के जादू की मर्यादा होती है। जेब भरी हो और मन खाली हो, तो बाजार का जादू खूब चलता है।

प्रश्न 3) "मन खाली होने" से क्या अभिप्राय है? यह खालीपन बाजारवाद को कैसे बढ़ावा देता है?

उत्तर :- मन में कोई इच्छा न होना। जब मन खाली हो और जेब में पैसा हो, तो व्यक्ति अनाप-शनाप चीजें खरीदता है। इससे बाजारवाद बढ़ता है।

प्रश्न 4) आज का उपभोक्ता जेब खाली होने पर भी खरीददारी करता है। यह समाज की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है?

उत्तर :- आज का उपभोक्ता जेब खाली होने पर भी खरीदारी करता है। लोग उधार लेकर या लोन लेकर सामान खरीदते हैं। यह उपभोक्तावाद और बाजारूपन की प्रवृत्ति को बढ़ाने की ओर संकेत करता है।

VASUNDHARAHINDI.COM

(2)

बाजार के जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है। वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो। मन खाली हो तो, बाजार न जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पी कर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य से भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब यह घाव बिल्कुल नहीं दे सकेगा, बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ न कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली कृतार्थता है -आवश्यकता के समय काम आना।

प्रश्न क) बाजार के जादू से बचने का सर्वोत्तम उपाय क्या है?

उत्तर :- बाजार के जादू से बचने का सर्वोत्तम उपाय है कि बाजार जाओ तो खाली मन नहीं रहना चाहिए।

प्रश्न ख) बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर :- बाजार की सार्थकता तभी है, जब हम केवल अपनी जरूरत का सामान ही खरीदें। वास्तव में इससे बाजार को सच्चा लाभ मिलता है।

प्रश्न ग) बाजार कब आनंद देता है?

उत्तर :- जब बाजार से वही सामान खरीदा जाता है, जिसकी हमें आवश्यकता है। तब बाजार आनंद प्रदान करता है।

प्रश्न घ) मन लक्ष्य से भरे होने का क्या आशय है?

उत्तर :- मन लक्ष्य से भरे होने का आशय है - व्यक्ति को पता होना कि उसे क्या सामान बाजार से खरीदना है।

VASUNDHARAHINDI.COM

(3)

एक बार चूरन वाले भगत जी बाजार चौक में दीख गए। मुझे देखते ही उन्होंने जय-जयराम किया। मैंने भी जयराम कहा। उनकी आँखें बंद नहीं थी और न उस समय वह बाजार को किसी भांति कोस रहे मालूम होते थे। राह में बहुत लोग, बहुत बालक मिले, जो भगत जी द्वारा पहचाने जाने के इच्छुक थे। भगत जी ने सब को हँसकर पहचाना। सबका अभिवादन लिया और सब को अभिवादन किया। इससे तनिक भी यह नहीं कहा जा सकेगा कि चौक-बाजार में होकर उनकी आँखें किसी से भी कम खुली थी। लेकिन भौचक्के हो रहने की लाचारी उन्हें नहीं थी। व्यवहार में पसोपेश उन्हें नहीं था और खोए-से खड़े नहीं वह रह जाते थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा पड़ा है। विद्रोह नहीं, प्रसन्नता ही भीतर है, क्योंकि कोई रिक्त भीतर नहीं है। देखता हूँ कि खुली आँख, तुष्ट और मग्न, वह चौक-बाजार में से चलते चले जाते हैं। राह में बड़े-बड़े फैंसी स्टोर पड़ते हैं, पर पड़े रह जाते हैं। कहीं भगत जी नहीं रुकते, रुकते हैं तो एक छोटी अंसारी की दुकान पर। वहाँ दो -चार अपने काम की चीज़ ली और चले आते हैं। बाजार से हठपूर्वक विमुखता उनमें नहीं है।

(पृष्ठ 91)

प्रश्न 1) लोग भगत जी का अभिवादन क्यों कर रहे हैं?

उत्तर :- लोग भगत जी के निश्छल, सरल व्यवहार के कारण उनके प्रति अपना सद्भाव प्रकट करने के लिए उनका अभिवादन कर रहे हैं।

प्रश्न 2) भगत जी फैंसी स्टोर देखकर भौचक्के क्यों नहीं रह जाते?

उत्तर :- भगत जी अपना लक्ष्य जानते हैं, अर्थात् भगत जी को पता है उन्हें क्या लेना है तथा उन्हें जो कुछ लेना है वो एक पंसारी की दुकान पर मिलेगा। इसलिए वह फैंसी स्टोर देखकर भौचक्के नहीं रह जाते।

प्रश्न 3) भगत जी बाजार किस लिए आए हैं?

उत्तर :- भगत जी को पंसारी की दुकान से जीरा, नमक आदि खरीदना है, इसलिए वह बाजार आए हैं।

प्रश्न 4) इस गद्यांश के आधार पर बताइए - बाजार के बारे में हमारा क्या रुख होना चाहिए?

उत्तर :- बाजार के प्रति हमारा रुख सकारात्मक होना चाहिए। बाजार से वही सामान खरीदना चाहिए, जो हमें चाहिए। बाजार के प्रति न लालच का और न तिरस्कार का भाव होना चाहिए।

VASUNDHARAHINDI.COM

(4)

सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सहृद और पड़ोसी फिर रहे ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो एक दूसरे को ठगने की घात में हो। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दीखता है और यह बाजार का, बल्कि इतिहास का सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है। तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है।

(पृष्ठ 91-92)

प्रश्न क) किस सद्भाव के ह्रास की बात की जा रही है? उसका क्या कारण है?

उत्तर :- यहाँ गाहक और बेचक के बीच होने वाले सद्भाव के ह्रास की बात कही गई है। ऐसा तब होता है जब गाहक अपने पैसे की ताकत दिखाकर अनाप-शनाप सामान खरीदता है तथा बेचक गाहक का शोषण करने को तैयार रहता है। इससे आपसी सद्भाव कम होता है।

प्रश्न ख) ऐसे बाजार से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :- ऐसे बाजार का अभिप्राय है जहाँ छल और कपट होता है, शोषण होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है।

प्रश्न ग) बाजार मानवता के लिए विडंबना कब बन जाते हैं?

उत्तर :- जब बाजार में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होता है, कपट होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं।

प्रश्न घ) अर्थशास्त्र के विषय में लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर :- अर्थशास्त्र औंधा है, मायावी शास्त्र है तथा अनीति का शास्त्र है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

उत्तर :- व्यक्ति पर जब बाजार का जादू चढ़ता है, तो वह अपनी पर्चेज़िंग पावर का उपयोग करता है। उसे लगता है उसके पास यह भी नहीं, वह भी नहीं, इसलिए वह अनाप-शनाप चीजें खरीदता जाता है। परंतु जब बाजार का जादू उतरता है, तब उसे लगने लगता है कि जिन चीजों को उसने अपने चारों तरफ इकट्ठा किया है, वे आराम पहुँचाने वाली न होकर आराम में खलल डालने वाली हैं।

प्रश्न 2) बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन सा पहलू उभर कर आता है? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर :- बाजार में भगत जी का सकारात्मक पहलू उभरकर सामने आता है। भगत जी बाजार में आँखें खोल कर चलते हैं, इसीलिए सबके अभिवादन का मुस्कुराकर उत्तर देते हैं। तरह-तरह का बढ़िया सामान बाजार में सजा है, पर उनकी आँखों में सामान के प्रति तिरस्कार नहीं है, न ही विद्रोह का भाव है, बल्कि आशीर्वाद का भाव है, प्रसन्नता का भाव है। उन्हें जो चाहिए, वो है नमक और जीरा, जो वह एक छोटी-सी पंसारी की दुकान से खरीदते हैं। उन्हें बाजार की किसी और दुकान से कोई लेना-देना नहीं है।

भगत जी का यह आचरण वास्तव में समाज में शांति स्थापित करने वाला है, क्योंकि इससे बाजार में नकली माँग उत्पन्न नहीं होती, महंगाई नहीं बढ़ती। वास्तव में भगत जी जैसे लोग ही बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं, जो कि समाज की सुख-शांति के लिए आवश्यक है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 3) बाजारूपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं?

अथवा

बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर :- जब एक ग्राहक अपनी पर्चेज़िंग पावर का प्रयोग करके अनाप-शनाप सामान खरीदता है तथा प्रत्येक दुकानदार ग्राहक को ठगने के लिए तैयार रहता है, तब आपसी सद्भाव खत्म हो जाता है और कपट तथा शोषण बढ़ता है। इसे बाजारूपन कहते हैं। बाजार की सार्थकता इसमें है कि दुकानदार एक निश्चित सीमा में ही लाभ ले एवं एक ग्राहक अपनी जरूरत का सामान ही बाजार से खरीदे। वास्तव में इससे बाजार को असली लाभ मिलता है तथा बाजार कृतार्थ होता है। कहना चाहिए भगत जी जैसे लोग ही बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

प्रश्न 4) बाजार किसी की जाति, लिंग, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता। वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इस बात से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर :- यह सत्य है कि बाजार किसी की लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, क्योंकि एक दुकानदार यह देखता है कि उसकी दुकान पर आया हुआ ग्राहक क्या सामान खरीदेगा, कितना सामान खरीदेगा? दुकानदार केवल ग्राहक की क्रय शक्ति को देखता है। व्यक्ति के जाति, धर्म या लिंग आदि को नहीं देखता। वास्तव में बाजार का यह भाव सामाजिक समता उत्पन्न करता है। आज समाज में, हर क्षेत्र में चाहे वह राजनीति हो, धर्म हो, नौकरी हो, हर क्षेत्र में भेदभाव पाया जाता है। अगर समाज के सभी लोग बाजार की तरह आपसी भेद भूल जाएँ, तो वास्तव में समाज का वास्तविक विकास होगा।

प्रश्न 5) आप अपने समाज के कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें-

1- **जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ।**
2- **जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।**

उत्तर :- क- बड़े-बड़े उद्योगपति अपने बच्चों की शादी में करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। आए हुए मेहमानों को बड़े-बड़े होटलों में ठहराते हैं और महंगे उपहार देते हैं। यहाँ पर पैसे की शक्ति का प्रदर्शन होता है।

ख- अनेक उदाहरण हैं जब पैसे की शक्ति किसी काम नहीं आई। जैसे बड़े से बड़ा अमीर व्यक्ति भी लाखों रुपए खर्च करके भी मृत्यु को नहीं हरा सकता। गाँधीजी जैसे आदर्शवादी लोगों को पैसे से नहीं खरीदा जा सकता।

प्रश्न 6) "बाजार दर्शन" पाठ में "बाजार जाने या न जाने" के संदर्भ में मन की कई स्थितियों का जिक्र आया है। आप इन स्थितियों से जुड़े अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए-

क- मन खाली हो। ख- मन खाली न हो। ग- मन बंद हो। घ- मन में नकार हो।

उत्तर :- क - मन खाली हो : जब मन खाली होता है, तो व्यक्ति बाजार जाकर हर चीज खरीदना चाहता है। मैं एक बार मॉल में गई। वहां के बड़े-बड़े शोरूम देखकर मुझे लगा कि बहुत बढ़िया सामान है। मुझे ये भी चाहिए और वो भी तथा मैंने बिना सोचे-समझे खूब सामान खरीदा। अपनी पर्चेज़िंग पावर का पूरा प्रयोग किया।

ख - जब मन खाली न हो : जब मन खाली न हो, तो व्यक्ति अपने लक्ष्य को जानता है। सुनीता को हिंदी की पुस्तक "आरोह" खरीदनी थी। दुकानदार ने उसे अनेक प्रकार से और सामान खरीदने के लिए कहा, पर सुनीता केवल पुस्तक खरीद कर घर आ गई।

ग - मन बंद हो : मन बंद होने पर इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं। सुलेखा के साथ एक बार मैं बाजार गई। उस दिन सुलेखा बहुत उदास थी। इसका परिणाम यह हुआ कि सारा बाजार घूमने के बाद भी कुछ भी सामान हम नहीं खरीद सके।

घ - मन में नकार हो : मन में नकारात्मक भाव होने पर हर चीज बुरी लगती है। "स्वदेशी अपनाओ" पर लोगों के विचार सुनकर विदेशी वस्तुओं को देखकर मेरा मन नकारात्मक भाव से भर उठता है। मुझे लगता है, जैसे विदेशी कंपनियाँ हमारा शोषण कर रही हैं।

प्रश्न 7) आप बाजार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होंगे। मॉल की संस्कृति, सामान्य बाजार और हाट बाजार की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? पर्चेज़िंग पावर आपको किस तरह के बाजार में नजर आती है?

उत्तर :- मॉल की संस्कृति उच्च वर्ग और एक मध्यम उच्च वर्ग के लोगों के लिए होती है। यहाँ बड़े-बड़े शोरूम होते हैं। लोग अपने पैसे का प्रदर्शन यहाँ सबसे अधिक करते हैं।

सामान्य बाजार की संस्कृति में जरूरत का सारा सामान उचित मूल्य पर मिलता है। यहाँ गाहक और बेचक में सद्भाव होता है।

हाट बाजार गाँव व कस्बों में सप्ताह में एक बार लगते हैं। लोग अपनी जरूरत का हर सामान यहाँ खरीदते हैं।

पर्चेज़िंग पावर का उपयोग मॉल संस्कृति में नजर आता है। ग्राहक पैसे का प्रदर्शन करने के लिए सामान खरीदता है। दुकानदार इसका पूरा लाभ उठाते हैं तथा ग्राहकों का खूब शोषण करते हैं।

प्रश्न 8) लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं?

उत्तर :- यह सत्य है कभी-कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप ले लेती है। जैसे - कई बार प्याज़ की कमी बाजार में हो जाती है। तब दुकानदार प्याज़ के दाम बढ़ा देते हैं, क्योंकि वो जानते हैं कि प्याज़ व्यक्ति की जरूरत है। इस प्रकार आवश्यकता ही शोषण का रूप ले लेती है।

प्रश्न 9) "स्त्री माया न जोड़े।" यहाँ माया शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति प्रदत नहीं, बल्कि परिस्थिति वश है। वे कौन सी परिस्थितियाँ होंगी, जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती है?

उत्तर :- माया शब्द संकेत करता है - धन-संपत्ति और घर परिवार की जरूरत की वस्तुओं की ओर।

एक स्त्री को घर गृहस्थी चलानी होती है। इसलिए वो घर की जरूरत की चीजें इकट्ठा करती है। बच्चों के विवाह के लिए स्त्रियाँ पहले से ही सामान, जेवर आदि इकट्ठा करती हैं। बच्चों की शिक्षा के लिए धन इकट्ठा करती हैं। आने वाले भविष्य को सुरक्षित करने के लिए वे धन इकट्ठा करती हैं। कभी-कभी अपने अहं को संतुष्ट करने के लिए भी स्त्रियाँ माया जोड़ती हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 10) “बाजार दर्शन” पाठ के आधार पर बताइए कि पैसे की पावर का रस किन दो रूपों में प्राप्त होता है?

उत्तर :- पैसे की पावर का रस प्राप्त होता है

1- अपने आसपास कीमती सामान, कोठी-बंगला, कार आदि को देख कर।
2- बैंक बैलेंस देखकर।

प्रश्न 11) बाजार दर्शन का क्या अर्थ है?

उत्तर :- लेखक ने “बाजार दर्शन” पाठ में बाजार के बारे में बताया है। उन्होंने बताया है कि बाजार लोगों को कैसे आकर्षित करता है। बाजार से आकर्षित होकर व्यक्ति अपनी पर्चेज़िंग पावर का उपयोग करता है। लेखक ने बाजार के आकर्षण के उपाय बताए हैं तथा बाजारूपन कैसे हानिकारक है, इसका भी सुंदर वर्णन किया है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM